॥ श्रीहनुमद्-वडवानल-स्तोत्रम् ॥

यह वडवानल स्तोत्र सर्वसिद्धि प्रदायक है। इसके पाठ से मनुष्य की सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। सभी प्रकार के सङ्कट से मनुष्य की रक्षा होती है।

Essence Of Astrology
- By Lokesh Agrawal
http://essenceofastro.blogspot.com/
https://www.facebook.com/essenceofastro

श्रीगणेशाय नमः

सङ्कल्प *

ॐ अस्य श्रीहनुमद्-वडवानलस्तोत्रमन्त्रस्य
श्रीरामचन्द्र ऋषिः, श्रीवडवानलहनुमान् देवता,
मम समस्त-रोग-प्रशमनार्थं, आयुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्ध्यर्थं,
समस्त-पापक्षयार्थं, सीतारामचन्द्रप्रीत्यर्थं च
श्रीहनुमद्-वडवानलस्तोत्रजपमहं करिष्ये।



ध्यानम्

मनोजवं मारुत तुल्य वेगं, जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।

वातात्मजं वानर यूथ मुख्यं, श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये॥

ॐ ह्रां ह्रीं ॐ नमो भगवते श्री महाहनुमते प्रकटपराक्रम

सकलदिङ्मण्डल-यशोवितान-धवलीकृत-जगत्त्रितय

वज्रदेह

रुद्रावतार लङ्कापुरीदहन उमा-अर्गलमन्त्र-उदधिबन्धन

दशशिरःकृतान्तक सीताश्वसन वायुपुत्र

अञ्जनीगर्भसम्भूत

श्रीरामलक्ष्मणानन्दकर कपिसैन्यप्राकार

सुग्रीवसाह्यरण-पर्वतोत्पाटन कुमार-ब्रह्मचारिन्

गभीरनाद सर्व-पापग्रहवारण सर्वज्वरोच्चाटन

डाकिनी-विध्वंसन ॐ ह्रां ह्रीं ॐ नमो भगवते

महावीरवीराय सर्वदुःखनिवारणाय

ग्रहमण्डल-सर्वभूतमण्डल-सर्वपिशाचमण्डलोच्चाटन

भूतज्वर-एकाहिकज्वर-द्व्याहिकज्वर-त्र्याहिकज्वर-चातु

र्थिकज्वर-

सन्तापज्वर-विषमज्वर-तापज्वर-माहेश्वर-वैष्णव-ज्वरान्
छिन्धि छिन्धि यक्ष-ब्रह्मराक्षस-भूत-प्रेत-पिशाचान्
उच्चाटय उच्चाटय ।

ॐ ह्रां ह्रीं ॐ नमो भगवते श्रीमहाहनुमते
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः आं हां हां हां औं सौं एहि एहि एहि
ॐ हं ॐ हं ॐ हं ॐ हं ॐ नमो भगवते श्रीमहाहनुमते
श्रवणचक्षुर्भूतानां शाकिनी-डाकिनीनां विषमदुष्टानां
सर्वविषं हर हर आकाशभुवनं भेदय भेदय छेदय छेदय
मारय मारय शोषय शोषय मोहय मोहय ज्वालय ज्वालय
प्रहारय प्रहारय सकलमायां भेदय भेदय ।

ॐ ह्रां ह्रीं ॐ नमो भगवते महाहनुमते सर्व ग्रहोच्चाटन
परबलं क्षोभय क्षोभय सकलबन्धनमोक्षणं कुरु कुरु

शिरःशूल-गुल्मशूल-सर्वशूलान्निर्मूलय निर्मूलय
नागपाशानन्त-वासुकि-तक्षक-कर्कोटककालियान्
यक्षकुलजलगत-बिलगत-रात्रिञ्चर-दिवाचर
सर्वान्निर्विषं कुरु कुरु स्वाहा ॥

राजभय-चोरभय-परमन्त्र-परयन्त्र-परतन्त्र-परविद्याच्छेद
य छेदय
स्वमन्त्र-स्वयन्त्र-स्वतन्त्रस्वविद्याः प्रकटय प्रकटय
सर्वारिष्टान्नाशय नाशय सर्वशत्रून्नाशय नाशय
असाध्यं साधय साधय हुं फट् स्वाहा ॥

॥ इति श्रीविभीषणकृतं हनुमद्वाडवानलस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

*सङ्कल्प पढ़ने के बाद जल छोड़ें